बी॰ए॰ भाग- III

तृतीय प्रश्न- पत्र

प्रश्न - अदम्य जीवन रिपोताज का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - अदम्य जीवन का मूल्यांकन -

अदम्य जीवन 'डॉ॰ रांगेय राघव के रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' से लिया गया है। रिपोर्ताज में लेखक यह प्रयत्न करता है कि पूरी स्थिति का सम्यक् वर्णन प्रस्तुत किया जाय और वर्ण्य वस्तु का एक भी जरूरी अंश छूटने न पाये। कभी-कभी वर्णन को सजीवता प्रदान करने के लिए नाटकीयता का भी प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत रिपोर्ताज में मैं डॉक्टर रांगेय राघव ने आजादी से पहले बंगाल में पड़े भीषण अकाल से पीड़ित लोगों की दुर्दशा एवं दीन-हीन अवस्था का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। लेखक अकाल पीड़ित गाँवों के भीतर घुसता चला जाता है और भीतर से अनेक छिपे तथ्य भी बाहर निकालता है। वह एक-एक आदमी से मिलता है, उसकी व्यथा-कथा सुनता है और फिर उसे अपने शब्दों से मूर्त करता है। हर आदमी अकाल के देश की कहानी अपने-अपने ढंग से कहता है। वर्णन की जीवंतता इसी से

जाहिर होती है कि लगता है कि जैसे आप सब कुछ अपनी आँखों से देख रहे हो।

'अदम्य जीवन' में घटनाओं का केवल सिलसिलेवार वर्णन नहीं है, उसमें लेखक के संवेदनशील हृदय का निजी उत्साह भी है जो घटनाओं की वास्तविकता पर कोई आवरण नहीं डालता बल्कि अनावृत रूप में प्रस्तुत कर उसे प्रभावपूर्ण बना देता है। रिपोर्ताज में छोटी-छोटी घटनाएँ अलग-अलग बिखरी पड़ी रहती हैं, परन्तु पाठक पर उसका सामूहिक प्रभाव पड़ता है।

रिपोर्ताज में घटना या दृश्य की प्रधानता होती है। इस दृश्य से लेखक को परिस्थिति और वातावरण का प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करना होता है। लेखक को एक वृद्ध अकाल के दुष्प्रभाव के बारे में बताता है। यह बात रिपोर्ताज में प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत की गयी है। सारा गाँव कब्रों से भरा है। वह कहता है "सिद्धिगंज के हाल-चाल सुनना चाहते हो? एक दो तीन गाँव के एक छोर से दूसरे छोर तक गिनते चले जाओ। कसम है, अगर तुम किसी को हाय-हाय करते पाओ। नहीं आज कुछ नहीं है। था एक दिन जब गाँव में रोने कराहने के सिवा और कुछ भी सुनाई नहीं देता था, मगर अब तो वह सब कुछ नहीं।"

'अदम्य जीवन' सामयिकता से कटा नहीं है क्योंकि वर्तमान में जुड़ा होना रिपोर्ताज की अनिवार्यता है। इसे कल्पना के जरिये घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता। जो कुछ होता है वह तथ्यपरक होता है, लेकिन इस तथ्यपरकता के साथ एक कथात्मकता भी होती है। वस्तु-स्थिति से कथात्मकता के जुड़ने से रिपोर्ताज की वर्णन-शैली कथा की तरह रोचक हो जाती है।

'अदम्य जीवन' में भी लेखक डॉ० रांगेय राघव ने अपनी लेखन कला और साहित्यिक प्रतिभा का भरपूर उपयोग किया है। कहीं-कहीं वर्णन इतना सजीव, भावपूर्ण और कलात्मक है कि पाठक का हृदय उसे पढ़कर आन्दोलित हो उठता है। लेखक ने इस रिपोर्ताज में इस बात का पूरा प्रयास किया गया है कि साहित्यिक अभिव्यक्ति या कलात्मक वर्णन परिदृश्य को बोझिल न बना दे।

21/04/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया